रणछोड़भट्ट कृत अमर काव्य और महाराणा प्रतापसे संबन्धित दो विवादास्पद प्रश्न

डॉ० व्रजमोहन जावलिया, एम० ए०, पी०-एच०-डी०

अकबरने, सिंहासन संभालनेके उपरान्त राजस्थानके राजपूत राजाओंको अनेक प्रकारके राजनीतिक दावपेचोंके प्रयोगसे अपने अधीन करनेका प्रयास किया और इसमें संदेह नहीं कि उसने इस उद्देश्यमें बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त की—पर मेवाड़के शासक महाराणा प्रतापपर उसकी किसी भी नीतिका कोई असर नहीं पड़ा। अकबर की ओरसे समय-समयपर कई प्रतिनिधि भी महाराणाको अकबरकी अधीनता स्वीकार कर लेनेके लिये समझाने हेतु मेवाड़में आये। महाराणाने उन्हें राज्योचित सम्मान दिया—पर बिना किसी सफलताके उन्हें खाली हाथ ही लौटना पड़ा। इनमें प्रमुख थे जलालखाँ कोर्ची, भगवन्तदास, टोडरमल और मानसिंह। मेवाड़में इन सभी राजदूतोंको यथोचित सम्मान दिया गया—पर दुर्भाग्यसे मानसिंहको एक सामान्य सी घटनापर मेवाड़से अपमानित होकर लौटना पड़ा। इस घटनाके विषयमें मेवाड़के इतिहाससे संबंधित लगभग सभी राजस्थानी, संस्कृत आदि भाषाओंमें लिखित ऐतिहासिक काव्य ग्रंथोंमें विवरण मिलता है। स्वयं मानसिंहके राजकुलसे संबंधित ऐतिहासिक काव्य ग्रंथों और ख्यातोंमें इस घटनाका उल्लेख हुआ है। फिर भी कतिपय विद्वान् नवीन प्राप्त सामग्रीके आधारपर अथवा ज्ञात सामग्रीपर ही पुनः मनन करते हुए नई स्थापनाएँ समय-समयपर इस विषयपर करते रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व मेवाड़के ही निवासी एक विद्वान् डा० देवीलाल पालीवाल, निदेशक, साहित्यसंस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदययुरने मेवाड़ राज्य इतिहाससे संबंधित और मेवाड़के महाराणा राजसिंहके आश्रयमें रणछोड़भट्ट द्वारा विरचित संस्कृत काव्य ग्रंथ "अमर काव्य"को प्रमाण रूपमें प्रस्तुत करते हुए अपने एक लेखमें यह संकेत दिया था कि उक्त काव्य ग्रंथमें मेवाड़में किये गये मानसिंहके अपमानका कोई उल्लेख नहीं है अतः ऐसी कोई घटना घटी भी होगी उसमें संदेह है—और अन्य राजस्थानी और मेवाड़ी काव्योंमें दिया गया विवरण कल्पित है।[1]

यदि अन्य ग्रंथोंको अप्रामाणिक मानकर अमरकाव्यमें इस घटनाका उल्लेख मिलनेपर ही इसे सत्य माना जा सकता हो तो मैं सविनय निवेदन करना चाहूँगा कि अमरकाव्यमें इस घटनाका सविस्तर विवरण प्राप्त है। इस ग्रंथमें संवत् १६३० वि०में घटी घटनाओंसे संबंधित विवरण विषयक श्लोक सं० २३से ५० जो इस लेखके परिशिष्ट भागमें दिये जा रहे हैं, ये महाराणा प्रताप द्वारा युक्ति-पूर्वक किये गये मानसिंहके अपमानका स्पष्ट शब्दोंमें उल्लेख हैं यह अंश स्वयं डा० देवीलाल पालीवाल द्वारा संपादित "महाराणा प्रताप-स्मृति-ग्रंथ"में भी प्रकाशित हो गया है।[2] अन्य ऐतिहासिक स्रोतोंसे इस काव्यमें स्वल्प अंतर अवश्य है, और वह है अपमानकी अनुभूतिके समय मात्र का। अन्य काव्योंके अनुसार मानसिंहने भोजनके समय ही अपने अपमानका अनुभव करके रोष प्रकट किया था, परन्तु अमरकाव्यके अनुसार महाराणा मानसिंहको

---

१. शोधपत्रिका वर्ष १९ अंक ४ पृ० ४४–४९।

२. महाराणा प्रताप स्मृति ग्रंथ—साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोजन कराकर और कपूर युक्त बीड़ा देकर प्रेम-पूर्वक विदा कर देते हैं, और उसके बाद मानसिंहको पता चलता है कि महाराणाने उस स्थानसे रसोईके बर्तन आदि हटाकर उस स्थानका जलसे प्रक्षालन करवाकर पवित्र मिट्टी और गोबरसे सफाई करवायी तथा गंगाजलका छिड़काव किया है—तब वह पूछता है कि यह क्या बात है, और एक वयोवृद्ध सामन्त उसे सारा कारण बताता है। और तभी मानसिंह क्रुद्ध होकर अपमानका बदला लेनेकी प्रतिज्ञा करता हुआ अकबरके पास जाकर सब वृत्तान्त कहता है।[1]

अतः यह मान लेना कि इस घटनाका राजस्थानी और मेवाड़ी काव्योंमें दिया गया विवरण काल्पनिक है—कोई अर्थ नहीं रखता विशेषरूपसे उस समय जबकि संबद्ध दोनों पक्षोंके ऐतिहासिक स्रोत उसकी पुष्टि करते हों।

एक दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न, जो अकबर और प्रतापके ही सम्बन्धोंको लेकर, अबुलफजल द्वारा अकबरनामेमें किये गये उल्लेखकी[2] पुष्टिमें पुनः खड़ा किया गया है! वह है महाराणा प्रतापका अकबरके द्वारा भेजी गई खिलअत पहनना और पाटवी कुमार अमरसिंहको मुगल दरबारमें भेजनेसे संबंधित। मेवाड़से विफल लौटे राजदूतोंने अपनी संतुष्टि और अपने स्वामीकी संतुष्टिके लिए जो कुछ भी कहा या विवरण लिखा वह स्वाभाविक था। अकबरनामेमें अबुलफजलका वर्णन भी कुछ ऐसा ही है। आत्मश्लाघाके अतिरिक्त इसे और कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि वीरविनोदके लेखक कविराजा श्यामलादास, श्री गौ० ही० ओझा, राजस्थानका इतिहास लिखनेवाले अन्य इतिहासकार या राजस्थानी साहित्यकार अबुलफजलके इस कथनको असंभव और असत्य मानते हैं तो कौनसा अन्याय करते हैं। इस घटनासे संबंधित कोई लिखित प्रमाण मिल पाता अथवा इस घटनाके तुरन्त बाद इसके फलस्वरूप किसी अनुकूल प्रमाणकी झलक भी कहीं दिखाई दे जाती तब तो उन्हें अकबरनामेकी इस सूचनाको सत्य माननेमें कोई आपत्ति नहीं होती—पर कोई प्रमाण मिलता तभी न!

यदि महाराणा प्रतापने खिलअत पहन ली होती, अमरसिंहको अकबरके दरबारमें भेज दिया होता—तो फिर हल्दीघाटीकी लड़ाई और उसके बाद भी पूरे दो युगों तक मेवाड़के साथ संघर्ष छेड़े रखनेकी अकबरको क्या आवश्यकता आ पड़ी थी? क्या अपने फर्जन्द मानसिंहकी आत्मतुष्टिके लिए ही यह आवश्यक हो गया था। स्थिति स्पष्ट है, प्रताप आत्माभिमानी था—स्वतन्त्रताके मूल्यको समझता था—और इसीलिए उसने वह सब कृत्य नहीं ही किया जिसका उल्लेख अबुलफजल करता है और यही कारण था मेवाड़पर अकबरके आक्रमण का।

यदि अबुलफजलका कथन सत्य है तो जहाँगीरनामेमें जहाँगीरको यह लिखनेकी आवश्यकता क्यों आ पड़ी थी कि "राणा अमरसिंह और उसके बाप-दादोंने घमंड और पहाड़ी मकानोंके भरोसे किसी बादशाहके पास इससे पहले हाजिर होकर ताबेदारी नहीं की है। यह मुआमिला मेरे समयमें बाकी न रह जावे।"[3] इससे पूर्व भी महाराणा अमरसिंहपर परवेजको भेजते समय उसने लिखा है—'राणा तुमसे आकर मिले और अपने बड़े बेटेको हमारे पास भेजे तो सुलह कर लेना। राणाकी उपस्थिति तो सर्वथा असंभव थी ही मुगलोंके दरबारमें, पर पाटवी पुत्रकी मुगलोंके दरबारमें उपस्थितिको भी आत्मसमर्पणका सूचक मान लिया गया था। जहाँगीरनामाके उपर्युक्त वाक्योंसे स्पष्ट है कि मुगलबादशाह अपनी इज्जत बचानेके लिए

१. अमरकाव्य—पत्र सं० श्लोक सं० (राज० प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान शा० का उदयपुर ग्रंथ सं० ७२०)
२. अकबरनामा—बिवरीज द्वारा संपादित—जि० ३ पृ० ८९-९२-९८
३. जहाँगीरनामा—अनुवादक ब्रजरत्नदास —(नागरी प्रचारिणी सभा) प्रथम संस्करण—पृ० सं ३४१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराणाके पाटवी कुँवरको अपने दरबारमें उपस्थित देखकर ही संतुष्ट हो जाना चाहते थे। अबुलफज़लका अकबरनामेमें यह उल्लेख भी अकबरकी झूठी शानको बचानेके लिए एक प्रयास मात्र था, और कुछ नहीं। जहाँगीर द्वारा भी अबुलफजलके उल्लेखपर कोई ध्यान नहीं दिया गया—स्पष्ट है अबुलफजलका कथन झूठा था।

और अबुलफजलके इस कथनको झुँठलानेका दूसरा प्रयास किया सर टामस रोने[1], जो जहाँगीरके दरबारमें अजमेरमें उपस्थित था। वह भी जहाँगीरके कथनकी पुष्टि करता है कि महाराणा अमरसिंह और उसके बाप-दादोंने किसी बादशाहके पास हाजिर होकर ताबेदारी नहीं की।

तीसरी पुष्टि उस सम्मान और समारोहसे हो जाती है जो महाराणाके वंशके पाटवी कुँवरको पहली बार मुगलदरबारमें उपस्थित होनेपर जहाँगीर द्वारा किये गये थे। अकबरके लिए भी मेवाड़को अपने अधीनकर महाराणाओंको अपने वशमें करनेका वही महत्त्व था जो जहाँगीरके लिए। फिर जहाँगीर कर्णसिंहके मुगल दरबारमें उपस्थित होनेपर इतनी खुशियाँ मना सकता है तो अकबरने ऐसी खुशियाँ क्यों नहीं मनायीं। विचारणीय है। इस प्रकार वर्षों पूर्व विद्वान् लेखक डा० पालीवालने निर्णीत समस्याको फिरसे उभारा है। अबुलफजलकी पुष्टि करनेवाला अब तक कोई अन्य स्रोत उपलब्ध नहीं था। डा० पालीवालने पूर्वोक्त अमरकाव्य ग्रन्थको ही अबुलफजलकी पुष्टिके लिए प्रस्तुत किया हैं।[1] अमरकाव्य महाराणा राजसिंहके कालमें विरचित मेवाड़के इतिहाससे सम्बधित उतना ही प्रामाणिक ग्रंथ है, जितनी राजप्रशस्ति। इसे राजप्रशस्ति महाकाव्यका ही पूर्वार्द्ध कह दिया जाय तो अनुचित नहीं होगा। उन्होंने अमरकाव्यसे निम्नलिखित अंश इसकी पुष्टिके उद्धृत किया है—

अकब्बरस्य पार्श्वेऽगादमरेशः कुमारकः।
यदा तदा मानसिंहो डोडियाभीममुख्यकैः ॥७७
अमरेशस्य वीरैः सह वार्तां क्रतौ लघु।
कांश्चिद्वार्तामिकथयत्तदा भीमोऽवदत्क्रुधा ॥७८
भवांस्तत्र समायातु मया घोररणे तदा।
जुहारस्तत्र कर्तव्यः पूर्वोक्तं वाक्यमित्यहो ॥७९

आश्चर्य होता है विद्वान् लेखकने इस श्लोकसे अमरसिंहका अकबरके पास भेजा जाना या उसका स्वयं अकबरके दरबारमें उपस्थित होना अर्थ कैसे लगा लिया। वैसे भी जिस रूपमें अपने सोचे हुए उद्देश्यकी सिद्धिके लिए उन्होंने पूर्वाग्रह सहित बिना पूर्वापरका प्रसंग उद्धृत किये हुए, इन श्लोकोंको उद्धृत किया है अतः यह कोई विशेष अर्थ नहीं रखता है। और यदि कोई अर्थ निकाला भी जाय तो कमसे कम वह अर्थ तो नहीं ही निकलेगा जो उन्होंने निकाला है।

ये श्लोक हल्दी घाटीके युद्धमें महाराणा प्रताप और मानसिंहमें होनेवाली सीधी टक्करकी वेलासे सम्बन्धित हैं। महाराणा प्रतापके साथ भीमसिंह डोडिया मानसिंहके सामने खड़ा है। यह भीमसिंह डोडिया वही सरदार है जिसने उदयसागर तालाबपर मानसिंहके अपमानकी दुर्घटनाके समय मानसिंह और महाराणा प्रतापके मध्य होनेवाली बातचीतमें राजकुमार अमरसिंहके साथ दौत्यकर्म किया था। और जिसने स्वयं ही मानसिंहकी गर्वोक्तिका उत्तर देते हुए कहा था कि यदि वह मानसिंह मेवाड़से निपटना ही चाहता है तो उसके साथ दो-दो हाथ अवश्य होंगे। यदि वह अपने ही बलपर आक्रमण करने आया तो उसका

१. शोधपत्रिका—वर्ष १९, अंक ४ पृ० ४४-४९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामना मालपुरेमें किया जायगा और यदि अपने फूफा अकबरके बलपर आया तो मेवाड़में जहाँ कहीं भी उचित स्थान और अवसर मिलेगा उसका यथोचित स्वागत किया जायगा। मानसिंहके साथ हुई इस तकरार में भीमसिंहने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि वह स्वयं उस हाथीपर भाला फेंकनेमें पहल करेगा जिसपर बैठकर मानसिंह आयगा। मानसिंह और भीमसिंहके मध्य हुए इस उग्र संवादका उल्लेख रावल राणाजी री वात[1], मेवाड़की वंशावलियों और वीरविनोद[2] में स्पष्ट रूपमें लिखा मिलता है।

हल्दीघाटीके युद्धस्थलमें भीमसिंह मानसिंहके सामने खड़ा है। उसे आज मानसिंहका स्वागत कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेका अवसर प्राप्त हुआ है। वह उदयसागर पर मानसिंहके साथ हुई अपनी तकरार में अपने वचनोंका स्मरणकर मानसिंहका स्वागत कर रहा है। अमरकाव्यके डॉ० पालीवाल द्वारा उद्धृत अंश उसी प्रसंगसे सम्बद्ध हैं। उस अंशके पूर्वके श्लोक निम्न प्रकार हैं, जिन्हें उन्होंने उद्धृत नहीं किया—

प्रतापसिंहस्य पुरस्सरस्स उद्दण्डसांडावत एव वीरः।
स डोडियाजातिभवश्च भीमो भीमप्रभावः समरेषु भीमः ॥७४
सेनावृतं वीक्ष्य स मानसिंहं, गजस्थितं संश्रितलोहकोष्ठम्।
सिंहप्रकोष्ठं किल लोहकोष्ठं, पूर्वोक्तवाक्यं विवदत्सु इत्ययम् ॥७५
विशिष्टकट्टारकमुत्कटाक्षः चिक्षेप पादे क्षतकारितस्य।
एवं विधायैव जुहारशब्दं, स्वस्था जगादेति जगत्प्रसिद्धम् ॥७६

और इससे आगे ही श्री पालीवाल द्वारा उद्धृत अंश है—

अकब्बरस्य पार्श्वेऽगाद् अमरेशः कुमारकः। यदा तदा मानसिंहो डोडियाभीममुख्यकैः ॥७७
अमरेशस्य वीरैः सह वार्तां क्रतौ लघुः। कांश्चिद्वार्ताम् अकथयत्तदा भीमोऽवदत् क्रुधा ॥७८
भवांस्तत्र समायातु, मया घोररणे तदा। जुहारस्तत्र कर्तव्यः पूर्वोक्तं वाक्यं इत्यहो ॥७९

और इससे आगेके श्लोकमें महाराणा प्रताप द्वारा मानसिंह पर भालेसे वार करनेका विवरण है।

प्रतापसिंहोऽथ परप्रतापः परंपराप्रापितपूर्णतापः।
तन्मानसिंहस्य करीन्द्रकुंभे, चिक्षेप कुंतं च शिवेव शुंभे ॥८०

स्थिति सर्वथा स्पष्ट है। यहाँ भीमसिंह अपने पूर्वकथित वचनोंका स्मरणकर मानसिंहका जुहार करना चाह रहा है और वह अपनी विशिष्ट कटार फेंककर मानसिंहके पाँवमें घाव करता हुआ उसका पालन करता है। राजप्रशस्तिमें भी यह प्रसंग थोड़ा भिन्न रूपमें पर इन्हीं शब्दोंमें दिया गया है। उसमें भीमसिंहके बजाय अमरसिंह मानसिंहके हाथी पर भालेसे वार करता है।[3] वीर विनोदमें भी भीमसिंह द्वारा मानसिंह पर इन शब्दोंके साथ कि "लो मैं आ गया हूँ" भाला फेंकनेका विवरण दिया है।[4]

भीमसिंहकी मानसिंहके साथ तकरार और प्रतिज्ञासे संबद्ध श्लोकोंके साथ श्लोक सं० ७७ में प्रथम चरण "अकब्बरस्य पार्श्वेऽगाद् अमरेशः कुमारकः—यदा" ही इस भ्रांतिका मूल कारण है। जिसमें निस्संदेह सीधा सा अर्थ यही निकलता है कि "जब अमरसिंह कुमार अकब्बरके पास गया।" और अगले चरणोंका

१. रावल राणाजी री वात—राज-प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, ग्रंथांक ८७६ पृ० १०४-६।
२. वीरविनोद—(कुँवर मानसिंहसे विरोध)—पृ० १४६.
३. राजप्रशस्ति महाकाव्य—प्रताप विषयक अंश -श्लोक २४।
४. वीरविनोद—(कुंवर मानसिंहसे विरोध)—पृ० १४६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्थ होगा तब मानसिंहने अमरसिंहके वीरोंमें मुख्य भीम डोडियाको बातचीतके दौरान कोई ओछी बात कह दी और भीमने क्रोधित होते हुए कहा 'जब मेरा घोर युद्ध होगा वहाँ आप आयेंगे तो आपका जुहार करूँगा। ये पूर्वमें कहे हुए वाक्य थे।' पूर्वमें बताया जा चुका है कि भीमसिंह और मानसिंहके मध्यका यह झगड़ा और भीमसिंहका उपर्युक्त कथन उस समय हुआ था जब मानसिंह अपमानित होकर कटु और ओछे वचन कहता हुआ अकबरके पास गया था। तो प्रथमचरणमें उसी वेलाका जिक्र होना चाहिए। राजप्रशस्तिमें इस प्रसंगके अंतर्गत श्लोक सं० २२ में 'अकब्बरप्रभोः पार्श्वे मानसिंहस्ततो गतः। गृहीत्वा दलं ग्रामे खंभनोरे समागतः ॥२२॥ अमर काव्यमें ही श्लोक सं० ५० में—'कोपाकुल स्मश्रु मुहु स्पृशः च। जगाम दिल्लीश्वरपार्श्वमेवं, वार्तामिमां तत्र जगाद सर्वं' और सदाशिव नागरकृत राजरत्नाकर[1] में 'स्मश्रु प्रमृज्य करजेन सवाहनीक. शीघ्रं जगाम च चकत्तनेशगेहं, की भाषा और शब्द विन्याससे अमरकाव्यके अंश 'अकब्बरस्य पार्श्वेऽगाद् अमरेशः कुमारकः' पाठको मिलाने पर स्थिति साफ हो जायगी कि यह अंश किससे सम्बधित होना चाहिए। इन सारी बातोंको देखते हुए हमें यह मान लेना चाहिए कि अमरकाव्यकी प्राप्त प्रतिमें, जो यद्यपि बहुत प्राचीन है[2] और सम्भवतः मूल आदर्श प्रति भी हो सकती है—इस चरणमें अशुद्धि हो गई है। यहाँ पाठ होना चाहिए 'अकब्बरस्य पार्श्वेऽगाद अंबरेश कुमारकः' अर्थात् अम्बर या आमेराधिपतिका कुमार (मानसिंह) जब अकबरके पास गया। मूल लेखकसे 'अंबरेश'के स्थानपर अमरेशः पाठ इससे आगे आने वाले चरणोंमें 'अमरेश' शब्दको बैठानेके प्रयासमें ध्यान विकेन्द्रित हो जानेके कारण हुआ है—ऐसा सम्भव है। ऐसी अशुद्धियोंका हो जाना एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। यदि यह मूल प्रति न होकर प्रतिलिपि हो तो प्रतिलिपिकारके अज्ञानके कारण भी ऐसा होना सम्भव है। शोधार्थीको पूर्ण अधिकार है कि वह निष्पक्ष होकर सम्यक् विचारके उपरान्त सत्यका अनुसंधान करता हुआ पांडुलिपियोंके अशुद्ध पाठोंका संशोधन करता हुआ अपनी खोजमें आगे बढे—उसी अधिकारका उपयोग करते हुए मैं यह संशोधन प्रस्तुत कर निवेदन करना चाहूँगा कि अबुलफजलके कथनकी इस ग्रन्थसे पुष्टि नहीं होती है। अमरसिंह कभी अकबर के दरबारमें उपस्थित नहीं हुआ। जब तक और कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिल जाते श्री श्यामलदास और श्री गौ० ही० ओझा द्वारा अनेक विचार मंथनके उपरान्त दिए गये निर्णयको ही अन्तिम माना जाना चाहिए।

●

१. राजरत्नाकर—(राज-प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान) ग्रं० सं० ७१८।

२. अमरकाव्य—ग्रंथ सं० ७२०—राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, शा० का० उदयपुर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org